

चलो आज 'मैं' 'तुम'  
और 'तुम' 'मैं' बन जाते हैं।  
फिर 'तुम' रहना इंतज़ार की साँझ में,  
'मैं' "वक़्त नहीं" कह ढल जाऊँगी।  
'तुम' ढूँढना मुझे आशाओं की रेत में,  
'मैं' लुप्त विचारों में मिल जाऊँगी।  
'तुम' प्रेम अथा निभाना..  
'मैं' मोह परिभाषा दे इसे, 'तुम' को मौन कर जाऊँगी।  
'तुम' अटूट साथ के दीप जलाना,  
'मैं' अतीत-सोच सी हवा बन इन्हें बुझा जाऊँगी।  
फिर 'तुम' मुझे खोने का डर जताना,  
और 'मैं' पाने का खेद बताऊँगी!!  
क्योंकि आज...  
'तुम' 'मैं', 'मैं' 'तुम' बने हैं...  
एक विचित्र चयन करने चले हैं!  
और फिर,  
'तुम' जितना अपना समझो मुझे,  
'मैं' अपनों के डर में ही रह जाऊँगी।  
'तुम' सुख में पहल, पीड़ा में भी विशेष भाग देना  
'मैं' कोई स्थान आखिरी तुम्हें दे जाऊँगी  
'तुम' संघर्ष की दौड़ में,  
मुझसे ठहराव की आस लगाना..  
'मैं' इसे ही बोझ समझ,  
तुम्हें अपेक्षा ना रखने का पाठ पढ़ाऊँगी!  
'तुम' अनंत साथ के लिये तरसते रहना  
बस उस पल ही 'मैं' अकेला रहना चाहूँगी!!



अब जाने देते हैं,  
किंतु...  
बड़े उपहारों का शौक्र नहीं मुझे,  
मैं थोड़ी बचकानी हूँ..  
एक कलावा बाँध के खुश,  
मैं ऐसी प्रेम दीवानी हूँ,  
फ़ुरसत में कभी सुनाऊँगी..  
ऐसी एक कहानी हूँ  
द्वापर में राधा मीरा  
मैं कलयुग में मतवाली हूँ!  
इसीलिए 'मैं' 'तुम' का फ़र्क़ सजाकर  
तुम पर हक़ जता रही हूँ  
“मैं” से “तुम” बन, अवस्था तुम्हारी भी जान रही हूँ❤️

~Neelakshi



## ‘‘मैं’’ ‘‘तुम’’ और चयन

चलो आज ‘मैं’ ‘तुम’,  
और ‘तुम’ ‘मैं’ बन जाते हैं..  
कुछ क्षण ऐसे बिताते हैं..  
इस अदल बदल को कर,  
चयन आजमाते हैं..  
तो..

